Online 30 Aug, 2022

(7)

ISSN : 0975-3664
RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यू.जी.सी. केयर लिस्टेड, शोध जर्नल
[A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, UGC Care Listed, Bi-lingual (Hindi & English) Research Journal of Arts & Humanities]

Year : 2022 **Month : September** **Vol. 3**

प्रधान संपादक
Chief Editor
डॉ0 (श्रीमती) नीलम मुकेश
Dr. (Smt.) Neelam Mukesh

66

संपादक
Editor
डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय
Dr. Rajesh Chandra Pandey

प्रकाशक : शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन), उ0प्र0
Published by : Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

शोध–धारा

SHODH-DHARA

वर्ष/Year : **2022, सितम्बर/2022, September**

Vol. 3, अंक 3

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल

A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, and U.G.C. Care Listed Research Journal of Arts & Humanities

प्रकाशन : डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव)
शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) उ०प्र०

Publisher : **Dr. Rajesh Chandra Pandey (General Secretary)**
Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

मुद्रक : कस्टमर गैलरी, मौनी मंदिर, उरई (जालौन), उ०प्र०

Printer : **Customer Gallery,** Mauni Mandir, Orai (Jalaun) U.P.

अंशदान/Subscription :

एक अंक One Volume	: **500/-**
व्यक्तिगत पंचवर्षीय Individual Five Year	: **2000/-**
व्यक्तिगत आजीवन Individual Life Membership	: **3000/-**
संस्थागत पंचवर्षीय Institutional Five Year	: **2500/-**
संस्थागत आजीवन Institutional Life Membership	: **5000/-**

(Duration of Life Membership is 10 year)

नोट : सभी प्रकार के भुगतान 'शोधधारा' उरई के नाम से देय है।

Note : All payments relating to this journal shall be made by draft in favour of the "*Shodh Dhara*", Payble at Orai.

खाता धारक का नाम`	: शोध धारा	**खाता संख्या**	: **7033852673**
बैंक का नाम	: इण्डियन बैंक	**IFSC Code**	: **IDIB000D695**
ब्रान्च कोड	: डी.वी.सी. ब्रांच **6136**	**MICR Code**	: **226019211**

The Journal does not ask for publication charges in any form.

कार्यालय : **डॉ० (श्रीमती) नीलम मुकेश**
प्रधान संपादक, शोध–धारा, १०७५, बैंक कॉलोनी, जालौन रोड, उरई (जालौन), उ०प्र०

: **डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय**
संपादक, शोध–धारा, २६२, पाठकपुरा, उरई (जालौन), उ०प्र०

Office : **Dr. (Smt.) Neelam Mukesh, Chief Editor, Shodh-Dhara,1075, Bank Colony, Jalaun Road, Orai (Jalaun) 285001,U.P., Mobile : 9450109471**

: **Dr. Rajesh Chandra Pandey, Editor, Shodh-Dhara, 262, Pathakpura, Orai (Jalaun) 285001,U.P. Mobile;9415592698(W), 9198204835, email:shodhdharajournal2005@gmail.com**

डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव, शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन)) मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी द्वारा कस्टमर गैलरी, उरई (जालौन) से मुद्रित करवाकर शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) से प्रकाशित। संपादक –डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय

Note : * The views expressed in the published articles1 are their writers own. The agreement of the Editorial Board or the Shodh Pratisthan is not necessary.* Disputes, If any shall be decided by the court at Orai (Jalaun) U.P.

२०. व्यक्ति एवं समाज का समन्वयात्मक सम्बन्ध और मुक्तिबोध की वैचारिकी	डॉ० भूपेन्द्र सिंह	128-134
२१. साहित्य एवं मनोविज्ञान का संबंध	डॉ० दीपेश व्यास	135-139
संस्कृत साहित्य		**140-160**
२२. नैतिकता के वैदिक सिद्धान्तों की सार्वजनीनता	डॉ० संतोष कुमार पाण्डेय	140-146
२३. लोकजीवन और भारतीय संस्कृति : एक विमर्श	डॉ. पूजा मिश्रा	147-151
२४. प्राचीन भारत के संस्कृत अभिलेखों की काव्य परम्परा	डॉ. मनीष पाण्डेय	152-160
दर्शन		**161-192**
२५. श्री स्वामी विवेकानन्द जी के आध्यात्मिक दार्शमिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन	सन्तोष कुमार सिंह	161-163
२६. २१वीं सदी के भारत में जय प्रकाश नारायण के सर्वोदय चिन्तन की प्रासंगिकता	डॉ० अरूण कुमार तिवारी	164-168
२७. धर्म विज्ञान कला और नैतिकता : सामाजिक एवं दार्शनिक विश्लेषण	डॉ० सतीश चन्द्र तिवारी	169-172
२८. डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जीवन वृत्त तथा शैक्षिक दर्शन	संजय कुमार दूबे	173-185
२९. गाँधी जी का शैक्षिक दर्शन और उसकी प्रासंगिकता	डॉ० ममता सिंह	186-192
संस्कृति		**193-255**
३०. नारी की यथार्थता	आर्या गुप्ता	193-199
३१. श्यामजी कृष्ण वर्मा का राष्ट्रवादी चिंतन	डॉ० फैजान अहमद	200-205
३२. विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजा राममोहन राय	डॉ० संजय शर्मा	206-212
३३. न्याय चला निर्धन से मिलने की संकल्पना और लोक अदालत	प्रो. रजनीश कुमार पटेल डॉ. सुधीर कुमार चतुर्वेदी	213-219
३४. नारी सशक्तिकरण की अनन्य संपदा : लक्ष्मीपुराण	डॉ. शशिकान्त मिश्र	220-225
३५. पौराणिक दृष्टि से वृक्षों का संरक्षण एवं महत्व : एक संक्षिप्त अवलोकन	डॉ० विनय कुमार पटेल	226-230
३६. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों पर सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	प्रतिभा खरे डॉ० राजेश त्रिपाठी	231-238
३७. बौद्ध शिक्षा दर्शन की विशेषताओं का वैश्विक शांति शिक्षा में योगदान	राजन कुमार त्रिपाठी	239-244
३८. विदुर नीति : एक सैद्धान्तिक मूल्यांकन	डॉ० नमो नारायण सत्येन्द्र गुप्ता	245-251
३९. पर्यावरणीय नैतिकता एवं दृष्टिकोण	डॉ. श्रद्धा तिवारी डॉ० पीयूष चन्द्र मिश्र	252-255

संस्कृति

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696
SHODH-DHARA ; Sep 2022; Vol. 03; P. 206-212

विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजा राममोहन राय

डॉ० संजय शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, सहकारी (पी.जी.) कॉलेज, मिहरावां, जौनपुर, उ.प्र.

(प्राप्त : ३० जून २०२२)

Abstract

राजा राममोहन राय (१७७२–१८३३) एक आधुनिक राजनीतिक विचारक हैं। भारत वर्ष में राय को 'आधुनिकता का प्रवर्तक', 'पुनरुत्थान का जनक, नवीन भारत का निर्माता एवं मानवता के प्रेमी' के रूप में जाना जाता है। उन्होंने देश को आधुनिक युग में प्रवेश दिलाया। राजा राममोहन राय के काल में देश में अनेक बुराइयाँ विद्यमान थी। ब्रिटिश शासन का सौतेला व्यवहार व्यक्ति और समाज के विकास को बाधित कर रहा था। उस काल की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए सौम्येन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं, 'आधुनिक भारत के इतिहास का अत्यधिक अंधकारमय युग, पुराना समाज और राजन्त्र तहस–नहस हो चुका था, उसके अवशेष चारों और बिखरे पड़े थे। कोई ताकत नहीं थी जो इन विकृतियों को खत्म कर दे। पुरानी बुनियाद पर नई स्थापना का प्रयत्न भी नहीं हो रहा था। मरी हुई परम्पराएँ, जड़ हो चुके रीतिरिवाज और मूर्खतापूर्ण कट्टरता देश की जीवन शक्ति को सोख चुके थे, निर्मम अंधकार चारों ओर बिखरा हुआ था। व्यर्थता और शुष्कता के इसी वातावरण में राजा राममोहन राय का पदार्पण हुआ।'

Figure : 00 **References : 30** **Table : 00**

Key Words: विचार और जीवन दर्शन तथा राजा राममोहन राय, राजाराममोहन का जीवन चिंतन

राजा राममोहन राय (१७७२–१८३३) एक आधुनिक राजनीतिक विचारक हैं। भारत वर्ष में राय को 'आधुनिकता का प्रवर्तक', 'पुनरुत्थान का जनक, नवीन भारत का निर्माता एवं मानवता के प्रेमी'[1] के रूप में जाना जाता है। उन्होंने देश को आधुनिक युग में प्रवेश दिलाया। राजा राममोहन राय के काल में देश में अनेक बुराइयाँ विद्यमान थी। ब्रिटिश शासन का सौतेला व्यवहार व्यक्ति और समाज के विकास को बाधित कर रहा था। उस काल की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए सौम्येन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं, 'आधुनिक भारत के इतिहास का अत्यधिक अंधकारमय युग, पुराना समाज और राजन्त्र तहस–नहस हो चुका था, उसके अवशेष चारों और बिखरे पड़े थे। कोई ताकत नहीं थी जो इन विकृतियों को खत्म कर दे। पुरानी बुनियाद पर नई स्थापना का प्रयत्न भी नहीं हो रहा था। मरी हुई परम्पराएँ, जड़ हो चुके रीतिरिवाज और मूर्खतापूर्ण कट्टरता देश की जीवन शक्ति को सोख चुके थे, निर्मम अंधकार चारों ओर बिखरा हुआ था। व्यर्थता और शुष्कता के इसी वातावरण में राजा राममोहन राय का पदार्पण हुआ।'[2] पुनर्जागरण के अग्रदूत राय ने सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था में मौजूद रूढ़िवादिता को समाप्त करने की बात कही व व्यापक परिवर्तन का समर्थन किया। राय ने स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्त्व की बात कही। राय के बारे में सोफिया फालेट

कहती हैं कि 'वे एक सजीव पुल के सदृश हैं जिससे गुजरते हुए भारत अपने अतीत से निकलकर अज्ञात भविष्य की ओर अग्रसर होता है। वे उदारवादी मूल्यों से ओत–प्रोत हैं। उन्होंने स्त्रियों और पुरुषों में समानता की भावना का संचार कर उनके एक समान अधिकारों का समर्थन किया। वे स्वतंत्रता के कट्टर पक्षधर थे। विभिन्न धर्मों में मौजूद रूढ़िवादिता और अंधविश्वास का घोर विरोध कर उन्होंने विश्व को स्वधर्म का संदेश दिया।'[३]

स्वतंत्रता व्यक्ति के बेहतर जीवन के लिए आवश्यक है। इसके अभाव में व्यक्ति का जीवन पशुवत है। राजनीतिक चिंतन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या 'व्यक्ति की स्वतंत्रता और राज्य के प्राधिकार के बीच कैसे सामंजस्य बैठाया जाय' रही है। इस बारे में राजनीतिक चिंतकों ने अपने विचार रखे। स्वतंत्रता की अवधारणा को सोदाहरण समझाते हुए वी. श्री रंजनी कहती हैं, 'मुझे यह स्वतंत्रता है कि मैं कार चलाना सीखूँ। इस बात से कुछ बातें स्पष्ट होती हैं– पहला, आपके इस फैसले के रास्ते में कोई रुकावट नहीं है। कोई भी जबरदस्ती आपको कार चलाना सीखने से नहीं रोक सकता है। दूसरा, कार चलाना सीखने के लिए जरूरी स्थितियाँ मौजूद हैं और आप इनका प्रयोग कर सकते हैं। इसका मतलब है कि आपके पास एक कार होनी चाहिए, एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो कि आपको कार चलाना सिखा सके, और एक ऐसी सड़क भी चाहिए जहाँ आप हिफ़ाजत से कार चलाने का अभ्यास कर सकें। इसलिए स्वतंत्रता की अवधारणा के साथ तीन पहलू जुड़े हुए हैं– विकल्प की अवधारणा, इस तरह के विकल्प को चुनने और उनका प्रयोग करने में बाधाओं का अभाव, और ऐसी परिस्थिति का होना जो आपको अपने विकल्पों को वास्तविक रूप देने में समर्थ बनाए।'[४] जॉन लाक का कहना है कि 'एक प्राकृतिक अधिकार के रूप में स्वतंत्रता सार्वभौमिक अधि ाकार' है। जे एस मिल स्वतंत्रता के तीन पहलूओं 'चिंतन करने और विचार विमर्श करने की स्वतंत्रता, वैयक्तिकता का सिद्धान्त और व्यक्ति के कार्यों पर प्राधिकार की सीमा की बात करते हैं।[५] भारतीय सर्वोच्च न्यायालय की एक टिप्पणी से स्वतंत्रता के संबंध में एक समझ आयी। जिसमें कहा गया है कि, 'जीवन के अधिकार में मानवीय गरिमा के लिए बुनियादी जरूरतों का पूरा होना सबसे महत्त्वपूर्ण है। जिन्दगी की बुनियादी जरूरतों में पर्याप्त पोषण, कपड़ा, आवास, पढ़ने लिखने और विभिन्न तरीकों से खुद को अभिव्यक्त करने की सुविधा, कहीं भी आने–जाने और दूसरे मनुष्यों से घुलने मिलने की आजादी शामिल है। निश्चित रूप से इस अधिकार के विभिन्न घटकों की मात्रा और अन्तर्वस्तु देश के आर्थिक विकास के स्तर पर निर्भर करती है लेकिन वर्तमान मामले को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि निश्चित रूप से इसमें जिन्दगी की बुनियादी जरूरतों को पाने का अधिकार शामिल होना चाहिए, इसमें मानवीय आत्म को न्यूनतम रूप से अभिव्यक्त करने वाले कार्यों और गतिविधियों को भी शामिल किया जाना चाहिए।'[६]

उच्च सूचना के काल में विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मामला पेचीदगीपूर्ण है। सभी जनों की इस बात को लेकर सहमति है कि विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अति आवश्यक है। लेकिन विचारक, कानून निर्माणकर्ता व जनता इस बात लेकर एकमत नहीं हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा कितनी होनी चाहिए। न्याययुक्त समाज के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

अपरिहार्य है। शोध पत्र में राजा राममोहन राय के विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता विषयक विचारों का अध्ययन किया गया है। शोधपत्र की पद्धति ऐतिहासिक व दार्शनिक है व द्वितीयक स्रोत प्रयोग में लाए गए हैं।

राजवीर सिंह दार्शनिक व डॉ निधि विनोद, 'राजा राममोहन राय और सुकरात जीवनी' (२०२१)[७], ममता झा 'समाज सुधारक राजा राममोहन राय' (२०१६)[८], विजित कुमार दत्तो 'राजा राममोहन राय' (२०१६)[९], लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा, 'राजा राममोहन राय' (२०१७)[१०], समशेर सिंह, 'राजा राममोहन राय' (२०१२)[११] विष्णु भगवान, 'भारतीय राजनीतिक विचारक' (२००३),[१२] सुषमा यादव, 'राममोहन रायः औपनिवेशिक संदर्भ और उनका आधुनिकतावाद' (२०००)[१३] उमा पाठक, 'राममोहन राय' (१६६८)[१४] ने राजा राममोहन राय के व्यक्तित्त्व, कृतत्त्व व चिंतन का अध्ययन किया है। समशेर सिंह ने राय के अधिकार विषयक अवधारणा का व्यापक अध्ययन किया है। समशेर सिंह का मानना है कि 'उदारवादी विचारों का पक्षधर होने के नाते वे मनुष्य के अधिकारों, स्वतंत्रता और उसकी गरिमा एवं महत्ता का समर्थन करते हैं।'[१५]

विचार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की औचित्यता के संदर्भ में मिल का यह विचार प्रशंसनीय है कि, 'यदि पूरी मानवता एक तरह की सोच रखती है और सिर्फ एक व्यक्ति उस सोच से अलग विचार रखता हो, तो भी उसे चुप नहीं कराया जाना चाहिए। इसी तरह यदि उस व्यक्ति के पास शक्ति आ जाए तो उसे भी पूरी मानवता को चुप कराने का हक नहीं है।'[१६] मिल इसका लाभ बताते हुए कहता है, 'मान लीजिए कि जिस अल्पसंख्यक या शक्तिहीन व्यक्ति को चुप कराया जाता है उसका विचार सही है, तो दूसरे लोग उसके विचारों की मदद से अपनी सोच को सही करने के अवसर से वंचित रह जायेंगे, यदि व्यक्ति का विचार गलत है तो वे अपने सच्चे विचार को अधिक स्पष्टतया से देखने के अवसर से वंचित रह जायेंगे।'[१७] स्कैनलॉन का कहना है कि 'भाषण और अभिव्यक्ति की आजादी बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इन पर पाबंदी लगाने से व्यक्ति की स्वायत्तता में गंभीर कटौती होती है।'[१८] राजा राममोहन राय मानव के मौलिक अधिकारों के समर्थक थे। उन्होंने सत्ता के निरंकुश स्वरूप की आलोचना की। साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, सामंतवाद तथा सत्ता के अन्य तानाशाही रूपों पर आधारित व्यवस्थाओं की भी उन्होंने खुलकर आलोचना की।'[१९] राय लाक, ह्यूगो ग्रोसियस व टॉमस पेन की तरह जीवन, स्वतंत्रता व सम्पत्ति के अधिकार को व्यक्ति के लिए जरूरी मानते हैं। वे अधिकारों को नैतिक आधार पर भी समर्थन देते हैं। वे संसदीय लोकतन्त्र का समर्थन करते हुए इसे जनता की भागीदारी वाला मानते हैं। राजा राममोहन राय से पूर्व कलकत्ता में राजनीतिक जागरूकता का अभाव था। ब्रिटिश शासन के समक्ष लोग अपनी बात रख नहीं पाते थे। ऐसे काल में राजा राममोहन राय ने नागरिक अधिकार और स्वतंत्रता के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए और इन माँगों को शासन के केन्द्र तक पहुँचाया।'[२०] राय का मानना था कि 'राज्य का कर्त्तव्य है कि वह जनता की सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और राजनैतिक दशाओं में सुधार के लिए कदम उठाये।'[२१]

राजा राममोहन राय राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक माने जाते हैं। उनकी स्वतंत्रता

की धारणा सार्वभौमिक थी। इनकी नजर में प्रत्येक व्यक्ति व देश बराबर था। स्पेन की तानाशाही शासन से १८२३ ई में दक्षिण अमेरिका का स्पेनी क्षेत्र मुक्त हुआ तो उन्होंने इस अवसर पर अपने मित्रों के साथ जश्न मनाया। पुर्तगाल में संवैधानिक शासन व तुर्को के विरुद्ध यूनानियों के स्वतंत्रता आन्दोलन का उन्होंने समर्थन किया। सन् १८३० की फ्रांस की क्रान्ति तथा उसके पश्चात् चार्ल्स दशम के पतन के कारण उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई।[२२] वे 'कलकत्ता जर्नल के संपादक को पत्र लिखते हुए इटली से प्राप्त होने वाली खबरों के विषय में कहते हैं, 'इटली में नेपल्स के लोगों को आस्ट्रियाई सेनाओं ने दासता के शिकंजे में डाल दिया था। वे यह भी कहते हैं, स्वतंत्रता के दुश्मन और तानाशाही के दोस्त न तो कभी सफल रहे और न अंततः रहेंगे'।[२३] राजनीतिक स्वतंत्रता के बारे में राय के विचारों के विषय में विपिन चन्द्रपाल ने कहा था, 'राजा राममोहन राय ही वह प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता का संदेश प्रसारित किया। उन्होंने अनिश्चित काल तक के लिए भारत की पराधीनता की कभी कल्पना नहीं की थी। वे चाहते थे कि अंग्रेजो को केवल ४० वर्ष तक ही इस देश में अपना सांस्कृतिक और मानवीय मिशन चलाना चाहिए। इस बीच भारत विश्व के अन्य देशों के साथ सम्पर्क में आकर प्रजांत्रात्मक शासन की स्थापना कर सकता है और इस प्रकार विश्व के अन्य सभ्य स्वतन्त्र राष्ट्रों के समकक्ष पहुँच सकता है।'[२४] राय व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ–साथ स्वतन्त्र राष्ट्र के पक्षधर भी है।

राजा राममोहन राय पाश्चात्य शिक्षा के महत्त्व से पूर्णतः अवगत थे। सन् १८२२–२३ में हिंदू कालेज की स्थापना व इससे पूर्व १८१६–१७ में उन्होंने एक अंग्रेजी स्कूल की भी स्थापना की थी। राय ने १८२३ में लार्ड एम्सहर्स्ट को एक पत्र लिखा जिसमें वे शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने की बात करते हैं। वे कहते हैं, अगर इंग्लैण्ड को वास्तविक ज्ञान से अनभिज्ञ रखना होता तो 'बेकोनियन' दर्शन को उस समय की शिक्षा पद्धति के स्थान पर आने की अनुमति नहीं दी जाती। यदि ब्रितानी विधान की यही पॉलिसी है कि इस तरह की शिक्षा द्वारा इस देश को अज्ञान के अंधकार में रखा जाए, तो संस्कृत शिक्षा पद्धति उस देश को अंधकार में रखने के लिए उत्तम रहेगी लेकिन जैसा कि ब्रितानी विकास के लिए सरकार जनता को केन्द्र मानती है, यह बेहतर होगा कि विकसित और प्रबुद्ध शिक्षा पद्धति को प्रश्रय दिया जाए। इसमें गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र और शरीर शास्त्र तथा इसी तरह उपयोगी विज्ञान पढ़ाए जा सकते हैं। यूरोपीय शिक्षा प्राप्त कुछ प्रबुद्ध व्यक्तियों को इसके लिए नियुक्त किया जा सकता है। उनके लिए एक कॉलेज, जिसमें सभी जरूरी पुस्तकें अन्य उपकरण तथा वैज्ञानिक यंत्रादि की व्यवस्था हो, खोला जा सकता है।'[२५] आधुनिक शिक्षा की नींव रखते हुए राय ने विचार अभिव्यक्ति की आजादी को प्रोत्साहन प्रदान किया।

राजा राममोहन राय का मानना था कि समाज में अंधविश्वासों व बुराइयों की समाप्ति के लिए शिक्षा एक साधन है। राजा राममोहन राय के समय में बहिष्कृतजनों व स्त्रियों का शिक्षा पर अधिकार नहीं था। वे कहते हैं, 'यदि भारत को अंधविश्वास और अज्ञानता से ऊपर उठना है तो देश में वैज्ञानिक शिक्षा की शुरुआत आवश्यक है उन्होंने सरकार से ऐसे कॉलेज खोलने को कहा जिसमें पाश्चात्य विज्ञानों की शिक्षा दी जाय। उन्होंने स्वयं सूरीपाड़ा में एक अंग्रेजी स्कूल भी खोला जिसमें

लगभग सभी लड़कों ने मुफ्त शिक्षा प्राप्त की। जिसका खर्च राममोहन राय द्वारा वहन किया गया। उन्होंने शिमला में भी एक एंग्लो–हिन्दू खोला और उसे आर्थिक मदद दी। वे कलकत्ता के हिन्दू कॉलेज की स्थापना के प्रेरणा स्रोत रहे।'[२६]

राय का विचार था कि समाचार पत्र विचार अभिव्यक्ति की आजादी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वह बताते हैं कि इस स्वतंत्रता से मन के अंधकार को दूर कर समाज की बुराइयों का अंत हो सकता है। समाचारपत्र समानता, शिक्षा व ज्ञान का प्रचार–प्रसार करेंगे और एक बेहतर जनमत तैयार होगा। राजा राममोहन राय प्रेस की आजादी के समर्थक थे। वे सम्वाद कौमुदी, मिरात–उल अखबार व ब्रह्मनिकल मैगजीन के संपादक रहे। राय ने प्रेस पर प्रतिबंधों की तीखी आलोचना की और बताया कि ऐसे प्रतिबंधों के निम्न परिणाम निकलते हैं[२७]

१. ज्ञान के प्रसार पर रोक लगाने से मानसिक उत्कर्ष का मार्ग अवरुद्ध होने की संभावना है।
२. ब्रिटिश कानूनों तथा रीति–रिवाजों से भली–भाँति परिचित देशवासियों को ब्रिटिश संसदीय शासन के गुणों की परस्पर जानकारी हासिल करने से रोकना तथा उसके द्वारा स्थापित निष्पक्ष न्याय व्यवस्था से एक–दूसरे को परिचित कराने से रोकना।
३. सरकार को उसके कार्यकारी अधिकारियों की गलती तथा ज्यादतियों की जानकारी प्राप्त करने के अवसर से वंचित करना।
४. लोगों से उनकी ब्रिटिश साम्राज्ञी तथा उनके परिषद् को भारत की वास्तविक स्थिति से अवगत कराने का अवसर छीनना।
५. लोगों को अपनी सरकार तथा अपनी समस्याओं के समाधान के लिए निवेदन करने से रोकना।

राजा राममोहन राय बताते हैं कि 'प्रेस के माध्यम से ही लोग अपनी समस्या को सरकार के सम्मुख रखते हैं और उसका समाधान होता है। इससे विद्रोह की स्थिति नहीं बनती है। प्रेस की आजादी सरकार और जनता दोनों के हित में है। राय ने विचारों की स्वतंत्रता को एक अमूल्य विशेषाधिकार कहा जो कि हमें देश के कानून द्वारा प्राप्त होती है और जिसका हम काफी समय से उपभोग करते चले आए हैं और इसका दुरुपयोग होने पर इसे बदल नहीं सकते।'[२८]

उन्होंने प्रेस की आजादी की रक्षा के लिए उच्च न्यायालय में प्रतिवेदन, ब्रिटिश राजा को प्रार्थना पत्र और प्रिवी काउंसिल के सामने याचना की। इनके प्रयासों का फल रहा कि लार्ड विलियम बैंटिक ने १८३५ में प्रेस से प्रतिबन्ध हटा दिए। सम्राट सहित परिषद् को सौंपे गए पत्र में उन्होंने ब्रिटिश सरकार की नियत के बारे में बताया, 'या तो सरकार ही उन्हें लागू नहीं करना चाहती या वह न्याय के सही मार्ग में हस्तक्षेप करना चाहती है व जूरी द्वारा मुकदमें सुने जाने के अधिकार को समाप्त करना चाहती है और वैधानिक तथा न्यायिक शक्तियों को इकट्ठा करके अपने हाथ में लेना चाहती है जो कि सारी नागरिक स्वतंत्रता के लिए घातक है।'[२९]

राय का मानना था कि प्रेस की आजादी संवैधानिक शासन को सुदृढ़ बनाती है। प्रेस जनता व सरकार को जोड़ता है और समाज के पिछड़े वर्गों में नई रोशनी फैलाता है। दामोदरन लिखते हैं, 'उनकी पत्रकारिता ने देश के समस्त भागों में राष्ट्रीय पुनर्जागरण के संदेश को पहुँचा दिया.....

.....उनका संदेश मानवता और विश्वबधुत्त्व का संदेश था।'[30] राय ने विचार व अभिव्यक्ति की आजादी का समर्थन करते हुए पुराने विचार व संस्कृति में जो कुछ अविनाशी था, उनकी प्रशंसा की। भारतीय परम्परा में उन्हें भरोसा था लेकिन उन्होंने आँख मूँदकर किसी बात का समर्थन नहीं किया। बुराई का निदान किया। उन्होंने हिन्दू धर्म ग्रन्थ के सारतत्त्व को विश्वपटल पर अनुवाद करके रखा। राय ने कठिनाइयों के बावजूद प्रतिकूल–राजनैतिक परिस्थितियों में देशी पत्रकारिता को मार्गदर्शन दिया और प्रेस की स्वाधीनता के लिए आन्दोलन का श्री गणेश किया। राय ने १८१५ में आत्मीय सभा, १८२७ में ब्रिटिश यूनिटेरियन एसोसिएशन, १८२८ में ब्रह्म समाज की स्थापना की। उन्होंने संवाद कौमुदी, मिरात–उल–अखबार को संपादित किया। राजा राममोहन राय वे पुरोधा हैं जिन्होंने भारतीय अंधयुग से देश को बाहर निकालकर आधुनिकता के युग में लाने का भागीरथ प्रयास किया। वे भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत थे जिन्होंने व्यक्ति स्वातन्त्रय के महत्त्व को समझा व अभिव्यक्ति की आजादी का समर्थन किया।

संदर्भ

१. शर्मा, बी.एम.; व अन्य, 'भारतीय राजनीतिक विचारक', रावत पब्लिकेशन, जयपुर, २०१६, पृ. १६८

२. टैगोर, सौमेन्द्र नाथ; 'राजा राममोहन राय' शुभ्रा शर्मा (अनु.), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, २००६, पृ. ७०

३. बुच, एम.ए.; 'राइज एंड ग्रोथ ऑफ इंडियन लिबरलिज्म', गुड कम्पेनियन्स, बड़ौदा, १६३८, पृ. ८२

४. श्रीरंजनी, वी.; ''स्वतंत्रता'' राजीव भार्गव, अशोक आचार्य (संपा.)' 'राजनीतिक सिद्धान्त एक परिचय' डार्लिग किंडरस्ले (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा (उ.प्र.), २०१३, पृ. ४१–४२

५. वही, पृ. ४७

६. वही, पृ. ५८, फ्राँसीस कोर्ली मुलिन बनाम एडमिनिस्ट्रेशन, यूनियन टेरिटरी ऑफ दिल्ली (१६८१)

७. सिंह, राजवीर; दार्शनिक निधि विनोद, 'राजा राममोहन राय और सुकरात जीवनी', पीएम प्रकाशन, २०२१

८. झॉ, ममता; 'समाज सुधारक राजा राममोहन राय', प्रभात प्रकाशन, २०१६

६. दत्तो, विजित कुमार; 'राजा राममोहन राय', नेशनल बुक ट्रस्ट भारत, २०१६

१० चोपड़ा, लक्ष्मेन्द्र; 'राजा राममोहन राय', भारतीय ज्ञानपीठ–वाणी प्रकाशन, २०१७

११ सिंह, समशेर; 'राजा रायमोहन राय'' अजय कुमार इस्लाम अली (संपा), 'भारतीय राजनीतिक चिंतन– संकल्पनाएँ एवं विचारक', डॉर्लिग किंडरस्ले (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, २०१२

१२. भगवान, विष्णु; 'भारतीय राजनीतिक विचारक', आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, २००३

१३. यादव, सुषमा; ''राममोहन राय औपनिवेशिक संदर्भ और उनका आधुनिकतावाद'' एम.पी. सिंह, हिमाँशु राय (संपा.), 'भारतीय राजनीतिक चिंतक, माध्यम बुक सर्विसेज, २०००

१४ पाठक, उमा; 'राममोहन राय', आत्मा राम एंड सन्स, दिल्ली, १६६८

१५ सिंह, समशेर; वही, पृ. १७६

१६ मिल, जॉन स्टुअर्ट; ऑन लिबर्टी, आरती सेठी, 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रा और सेंसरशिप का सवाल', राजीव भार्गव, अशोक 'आचार्य' (संपा.), वही, पृ. ३०६

१७ वही

१८ स्कैनलॉन, थॉमस; ''अ थियरी ऑफ फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन'', फिलासफी एंड पब्लिक अफेयर्स, १ (२),